

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/

Checked 2012



Ncc. No. 48tom.1788 Title - advination. Nuthor - an enactor. Date - ena 1764. Subject - satisfied. tolio - 4 Xerox - 8.

गश्राणेश्वास्त्रमः । यस्ति। जित्रतिष्तं हानी थे रश्रित्रमाती कमन्येर्गते दु मंनत् गन्नमाद्वान्यत् प्रश्नित्रम् स्वाम्या में एत्या रिवर्यमान्य स्वाधा । १ ।। शात्या जम्माद्वान्यत् प्रतिसम्बन्धा में त्वार्या रिवर्यमान्य स्वाधा प्रति । । स्वाधा स्वाध मुक्छ गुभुवोद्यं गंगिशेलान्य यः १८॥ मिर्हे गेषु नगंगषर्गुरुष्ते तादि तारा जंस्युः स्त्रियां राताशान्ति नगिद्देशास्य गुजे ज्या रादि जानां धेरे ११ पणाणाम्यण बाहवः शिनवुधे देष्यास्य जिन स्मा भुगंशिलान्य ए शर्ति भिः कुल सितते उपिनयो विश्वित्र शिला चाये जीविशातत्र भेगशान शिक्ष क्ष्यं चा निर्मित्र दे ते उपिता व न्यस्य त्रव च यो द्रय प्रयप्ते द्रव स्वार्थ्य या गत्ने भे नास्य दिन दि उपि भेग शत्र यो प्रयं गादि विश्वित्र भिनि स्त्र ग्रेस्ट त्व क्षेत्र प्रयानिक श्रे किया निर्मे क्ष्ये प्रयो प्रयो प्रवित्र श्रित हरे शाः । स्वार्थित हर् सिव्या निर्मे क्ष्ये त्व स्त्र श्रेष्ट्र स्व श्रेष्ट्र शाः । स्वार्थित हर्षे स्व स्व स्व स्त्र हिंद्र स्व श्रेष्ट्र स्व स्व स्त्र हिंद्र स्व स्त्र स्व स्त्र हिंद्र स्व स्त्र स्व स्त्र हिंद्र स्व स्त्र स्व स्त्र स्व स्त्र स्व स्त्र स्व स्त्र स्

ले ४ असम्बन्धातादियाम्बयं।।एक सि विक्रमाल्य मास्यात्रवादीयं ें शमध्येत्रमान हा हा अवस्थ्यं मुख्यिति पूर्णित तो न्यत्ये मा र्वेको भायाशस्य न्यता स्यदी प्रिविवर्त्त दामगण्या मेद्दी स्येशा न क्रें धिचनमानमानस्यादीसरापाद्यस्यः १११२। त्रोक्षेत्रं सद् े पुराति तरस्यार्थापता लायया जनस्यापी कमनेद्रयो मृथि शितंत्रं ब् वेत तर्मायने। स्वक्षा अभ्यता स्वत्रद्दन्य र्नेमध्या स्वनी-पारि ने अन्ति। त्री-पारस्य एका स्वनी-पारि ने उणशीलादियागत्रयात्रियात्रप्रदास्यस्य पार्श्वात्रयात्राम्ययाश्रात्राम्यय - अ दावल हर ६६६ चान थार काणेब ३ हे स्यशः १३ शांशक भाग्यामर श श्रियानी-पर्वाद्वन प्रवंत्रपर्यत्रपाद्धाने मुख्यपं-पस्पप्यान असुपन्यान । पा दान्निवंशां पन्ताः ॥१४॥नी-परवंदातर पन्नीपनिम पन्नित्र निम्य उत्तरा जा नहन्यानवापर्यका स्वा उनद्रत्या मंबला १५ । र तिपंच यत्र मोब निप

सूर्यी जो सिनसी त्रामू राशिव दे शुक्ता रखें। चत्र माने पाये पुचरी विशेष मनने जार भिन्ना स्वापित्र भवाती है। दिन म्या प्रिता प्रीक्षिण स्वाप्त है। मिन्ना स्वाप्त है। मिन्ना स्वापित स्वाप्त है। मिन्ना स्वाप्त है। मिन्ना स्वाप्त है। स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्व

 भगवानश्रभद्भित्रणामित्रंवेदन्। एतः द्वावप्तादिवितः तिष्तंस्या नादित्रा नं पय स्वरा नास्यद्वात्रम् द्वावशाद्वं द्वाविद्वाद्वादित्र। दि तिवर्षप्त त्वस्यपद्यात्रम् मत्रे द्वादिव्या प्रसादतः ॥शिष्ट्राच्यात्रम् म्वाद्यात्रम् प्रदेशः व्याद्यात्रम् प्रदेशः वः।।२५।। दिन्देशवदेवद्यविद्यात्रम् चितावर्षप्रतेष्ठाः स्वरामाः।।६६ । ११३०६५ श्रभ स्तिवत्यरं प्रार्गशी प्रमासाः। दोभोद्रविद्यरं पाति वित्रं स्वार्थपरो पद्याराश्चे। ६९ ।।६५ ।।



,CREATED=24.09.20 10:34 TRANSFERRED=2020/09/24 at 10:36:18 ,PAGES=8 ,TYPE=STD ,NAME=S0003706 ,Book Name=M-1768-VARSHPHAL PADHHATI ,ORDER_TEXT= ,[PAGELIST] ,FILE1=0000001.TIF ,FILE2=00000002.TIF ,FILE3=0000003.TIF ,FILE4=0000004.TIF ,FILE5=0000005.TIF ,FILE6=0000006.TIF ,FILE7=0000007.TIF ,FILE8=0000008.TIF

[OrderDescription]